भूमिका

कहा जाता है कि प्रत्येक सदी अपनी पिछली सदी के मुकाबले नए भविष्य की आशा के साथ आती है, नई सदी में जहाँ एक ओर विकास के नए प्रतिमान गढ़े जाते हैं, वहीं पिछली सदियों के मुकाबले विकास और सफलता तक पहुंचने का रास्ता और अधिक संघर्षमय एवं चुनौतीपूर्ण हो जाता है। इस संघर्ष एवं चुनौती का सामना समाज के प्रत्येक वर्ग को करना पड़ता है। इक्कीसवीं सदी में जहाँ हम सफलता की नई ऊँचाइयों को छू सकने में कामयाब हुए, वहीं कुछ समस्याएं और अधिक विकराल रूप में सामने आई हैं, उनमें किसानों एवं मजदूरों की समस्या सबसे जीवंत दिखाई देती है।

भारतीय किसानों की स्थिति बहुत लंबे समय से अधिक अच्छी तो नहीं कही जा सकती, लेकिन इस सदी में किसानों एवं मजदूरों की स्थिति विकट होती जा रही है। भारतीय किसान एवं खेतिहर मजदूरों की स्थिति पर जब विचार किया जाता है तब यह बात सामने आती है कि जो हमारे समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं वो लगातार उपेक्षित बने हुए हैं। ऋण की समस्या, उपज की समस्या, खाद, बीज की समस्या, बाढ़, अकाल की समस्या से जूझते- जूझते भारतीय किसान लगातार हांफ रहा है और विडंबना यह है कि उसे कहीं से भी किसी प्रकार की राहत मिलने की उम्मीद नहीं है। यही स्थिति खेतिहर मजदूरों के संबंध में भी कही जा सकती है।

खेती में एक अनिश्चितता का भाव हमेशा बना रहता है, इसलिए खेतिहर मजदूरों का तेजी से शहर की तरफ पलायन हो रहा है। इसमें केवल मजदूर ही नहीं, बल्कि सीमांत किसान भी शामिल हैं। पलायन के बाद गाँव से शहर आए हुए किसान-मजदूरों की हालत बहुत अच्छी नहीं रहती है और यहाँ पर भी श्रम की अनिश्चितता बनी रहती है। किसान एवं खेतिहर मजदूरों की स्थिति, उनकी समस्याओं, उनके संघर्षों एवं चुनौतियों को साहित्य में कब-कब, कैसे-कैसे जगह मिली है, इसी की पड़ताल करते हुए प्रस्तुत शोध-विषय का चयन किया गया है। चूंकि हिंदी साहित्य की उपन्यास विधा में हमेशा से मेरी रुचि रही है,

इसलिए उपन्यास विधा को मैंने अपने शोध के लिए उपयुक्त पाया। ग्रामीण परिवेश में निवास करने के कारण किसान जीवन से मेरा हमेशा जुड़ाव बना रहा। जब मुझे शोध करने का अवसर प्राप्त हुआ तो मैंने इस दिशा के बारे में और भी गंभीरता से सोचना प्रारंभ किया। अंततः मेरे शोध-निर्देशक द्वारा ही उपन्यासों में किसान जीवन एवं खेतिहर मजदूरों को आधार बनाकर शोध करने का सुझाव प्राप्त हुआ। उन्हीं के निर्देशन में 'इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में किसान एवं खेतिहर मजदूर: संघर्ष और चुनौतियाँ' विषय पर शोध-कार्य करना सुनिश्चित हुआ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध को अध्ययन की दृष्टि से पांच अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय 'किसान एवं खेतिहर मजदूर : जीवन और संघर्ष' में यह दिखाने का प्रयास किया है कि किस प्रकार किसान जीवन और खेतिहर मजदूर जीवन का प्रारंभ होता है। किसानों को विभिन्न श्रेणियों में विभक्त करते हुए उनकी अलग-अलग तरह की समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। कृषि क्रांतियों, कृषि-नीतियों, किसान आंदोलन, भूमि व्यवस्था आदि की विस्तारपूर्वक चर्चा की गई है।

द्वितीय अध्याय 'हिंदी के प्रमुख किसानी उपन्यास' में यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि साहित्य में किसान एवं खेतिहर मजदूरों की समस्याओं को उपन्यासकारों ने उपन्यास लेखन के आरंभिक दौर में ही शुरू कर दिया था। भले ही ये उपन्यास अपने समय में किसानों की समस्याओं को यथार्थ रूप में चित्रित करने में असफल रहें, किंतु इन्होंने आने वाले समय के उपन्यासकारों के लिए एक जमीन तैयार करने का कार्य किया। इसी जमीन पर चलकर ही हर काल खंड के उपन्यास साहित्य में किसान और खेतिहर मजदूरों की समस्याओं को उपन्यासकारों ने अपने साहित्य लेखन का विषय बनाया।

तृतीय अध्याय 'इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में किसान जीवन का संघर्ष और चुनौतियाँ' में इक्कीसवीं सदी में किसान को किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है एवं उनकी समस्याओं के लिए कौन-कौन से कारण उत्तरदायी हैं। इन सब विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई है। साथ ही

इक्कीसवीं सदी में किसानों के प्रति शासन तंत्र के रवैये एवं शासन तंत्र के विरुद्ध किसान आंदोलन पर भी बात की गई है।

चतुर्थ अध्याय 'इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में खेतिहर मजदूरों का संघर्ष और चुनौतियाँ' अध्याय में यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि इक्कीसवीं सदी में एक खेतिहर मजदूर का जीवन किसानों से भी बदतर होता है । उसकी गणना समाज के सबसे निम्न स्तर पर की जाती है । वह जीवनपर्यंत समस्याओं का सामना करता है। बेरोजगारी, भूमि समस्या, पलायन के कारण उसकी हो रही दुर्दशा के निवारण की तरफ किसी का ध्यान ही नहीं जाता है।

पंचम अध्याय 'इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में किसान और खेतिहर मजदूर : तुलनात्मक अध्ययन' में यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि किसान एवं खेतिहर मजदूर दोनों ही कृषि कार्य से जुड़े हैं। इनमें से एक के बिना दूसरे का अस्तित्व संकट में आ सकता है। फिर भी इस अध्याय में यह खोजने का प्रयास किया गया है कि आखिर किन मायनों में ये एक दूसरे से भिन्न हैं और किन मायनों में समान। उनकी समस्याएं एक ही तरह की हैं या भिन्न-भिन्न हैं। 'उपसंहार' में सभी अध्यायों से प्राप्त निष्कर्षों को समाहित किया गया है।

आभार व्यक्त करने की परंपरा में सबसे पहले मैं अपने शोध-निर्देशक डॉ.अमित कुमार का आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके कुशल निर्देशन में यह शोध कार्य निर्बाध रूप से पूरा हो सका। शोध-विषय के चुनाव से लेकर अध्याय विभाजन के कार्य तथा शोध-लेखन के प्रत्येक पड़ाव पर उनका निर्देशन प्राप्त होता रहा । उन्होंने न सिर्फ शोध-निर्देशक की भूमिका सफलतापूर्वक निभायी, बल्कि शोधकार्य के दौरान एक अभिभावक के रूप में भी उनका स्नेह प्राप्त होता रहा। हिंदी विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ.सिद्धार्थ शंकर राय एवं डॉ.अरविंद सिंह तेजावत के प्रति भी मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, जिन्होंने मुझे समय-समय पर शोध-कार्य से संबंधित महत्त्वपूर्ण सुझाव दिए।

परिवार के सभी सदस्यों में मैं, सबसे पहले अपनी माता श्रीमती आशा मिश्रा को आभार देना चाहूंगी जिनके उत्साहवर्धक बातों के कारण ही मैं अपने शोध कार्य को पूरा करने में सफल हुई हूँ। अपने पिता श्री चिंतामणि मिश्र को मैं अपने हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ जो चुप रहते हुए भी बहुत कुछ कह जाते हैं उनकी यही आदत मुझे जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देती रही है। मेरे छोटे भाई-बहन जिनसे इस शोधकार्य के दौरान हुई छोटी-छोटी नोकझोंक खासकर भाई मृत्युंजय का चुलबुला स्वभाव इस शोध कार्य में मुझे उर्जा देने का काम करता रहा है।

डॉ. अखिलेंद्र प्रताप सिंह एवं डॉ. सुधा के प्रति मैं अपना विशेष आभार ज्ञापित करती हूँ, जिनका सहयोग विधिवत शिक्षा (स्नातक एवं स्नातकोत्तर) से इस शोध प्रबंध को लिखने तक बना रहा है।

इस शोध लेखन में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी लोगों का मैं हृदय से धन्यवाद करती हूँ। मित्र अमन और विकास से इस शोध प्रबंध लेखन में मिले सहयोग के लिए उनके प्रति अपना विशेष आभार व्यक्त करती हूँ। साथ ही ऐसे मित्र का आभार भी व्यक्त करती हूँ जिनके सहयोग से ही मैं अपना शोध कार्य पूरा करने में सफल हुई हूँ। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय एवं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पुस्तकालय के सभी कर्मियों के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

(प्रतिभा मिश्रा)